रात्रिक्लास 23/5/68 ओमशान्ति शिवबाबा याद है?

यह है, आत्माओं और परमातमा का मेला। बच्चे तो बहुत ही रमणीक होने चाहिए; क्योंकि देवताएँ रमणीक ; परंतु है बड़ी राजधानी। सभी एक रस हो नहीं सकते। फिर भी कैसे–कैसे रमणीक हैं ज़रूर। रमणीक कौन हो जिनको खुशी है और उनमें दैवी गुण है। कृष्ण और राधे रमणीक हैं ना। उनमें कशिश है। देवताओं में कशिश है; (क्य)ोंकि उन्हों की आत्मा और शरीर दोनों ही पवित्र हैं; इसलिए कशिश करते हैं, रचणों में गिरने की। सन्यासी देवताओं के आगे झुकते हैं। कोई घमण्डी होते हैं जैसे– शंकराचार्य, है घमण्डी; परन्तु झुकता है। शिव के और (दे)वताओं के चित्र के आगे। क्योंकि बाप और दादा के बनाए हुए देवताएँ रमणीक हैं। उनमें पवित्रता की कशिश तो अभी तक चल रही है। अभी जितनी कशिश इनमें है इतनी तुम्हारे में भी होनी चाहिए। जो समझते हम लक्ष्मी–नारायण बनेंगे; क्योंकि तुम्हारी यह कशिश अविनाशी बन जाती है। यहाँ ही कशिश होगी; क्योंकि (अ)ात्मा पवित्र हो जाती है। कशिश उनमें है, जो याद की यात्रा में रहते हैं। याद में है पवित्रता। पिवत्रता में है कशिश। अभी तुमको मालूम हुआ है। तुम जानते हो, इन्होंने जो यह राजाई पाई है ज़रूर राजयोग से पाये (है)। तुम यहाँ आए ही हो यह पद पाने लिए। बाप बैठ राजयोग सिखाते हैं। बाप–टीचर भी साथ ले जाने वाला भी है, तो बच्चों को सदैव हर्षित मुख रहना चाहिए। सदैव हर्षित रहेंगे जब, अलफ और बे की याद में होंगे। बहुत रमणीक भी होंगे। जानते हो यहाँ रमणीक बन भविष्य में रमणीक बनेंगे। यह है सच्ची कमाई। सच्चे बाबा सच्ची कमाई करा रहे हैं जो साथ चलने वाली है। भक्ति मार्ग में जो कमाई करते हो वह अल्पकाल लिए। तो इस पढ़ाई में बच्चों को बड़ा ख़बरदार रहना चाहिए। भल साधारण रूप में हो। पढ़ाने वाले, पढ़ने वाले सभी साधारण हैं। बाबा–मम्मा हमारा कितना साधारण हैं। तो हम सभी भी साधारण ही रहेंगे; क्योंकि वनवा का भी रिवाज़ चला आता है ना। बहुत ही मैला कपड़ा पहनते हैं। तेल आदि लगाते हैं और ब्राह्मणों द्वारा सगाई होती है। यहाँ भी ऐसे है। ब्राह्मणों द्वारा सगाई होती है। जाना है ससुर घर। कुछ भी देह का भान नहीं। किसकी हल्की साड़ी है दूसरे को अच्छी देखते हैं तो ख़्याल होगा, यह तो इनकी बहुत अच्छी है, हम भी क्यों नही ऐसे पहनें। यह तो बनावा में हुआ नहीं। तुम इस साधारण में रह इतना ज्ञान देते हो। भल कपड़ा साफ करते, बर्तन साफ करते भी कोई को बाप को(का) परिचय देते हो तो नशा चढ़ जाता है। मनुष्य वण्डर खावेंगे, इतना ज्ञान! है तो राजयोग गीता का ना। नशा चढ़ता है। बाबा भी अनुभव सुनाते (हैं।) हम बैठ बच्चों से खेलते हैं। सामने बाप का परिचय देते हैं। याद की ताकत होने कारण वह भी खड़ा हो जावेगा। वण्डर खावेंगे, इतना साधारण इसमें इतना बल! जो हम उनके सामने कुछ बोल नहीं सकते। हमारा योगबल ऐसा है। वह चुप होकर खड़ा (हो) जावेगा। मुख से कुछ निकलेगा नहीं। यह नशा होना चाहिए। कोई भी बहन वा भाई आवे हम उनको विश्व का मालिक बनने की मत दे सकते हैं। इतना नशा होना चाहिए। अपने लक्ष्य में खड़ा हो जाना चाहिए। बाबा सदैव कहते हैं तुम्हारे (में) ज्ञान है; परन्तु जौहर नहीं। याद की यात्रा से ही तुम प्योर बनते हो और ताकत मिलती है। भारत का प्राचीन योग है ना। बच्चों को शक्ति मिलती है बाबा से। इसपर ध्यान बहुत चाहिए। हम बाबा के सन्तान हैं; परन्तु बाबा जितना हम पवित्र नहीं हैं। सो बनना ज़रूर है। एमाऑबजेक्ट सामने है ना। योग से ही तुम पवित्र बनते हो। सारा दिन अनन्य यह ख़्यालात करते रहते। अंधों पर तरस आता है। यह सब अंधे। ज्ञान के चक्षु नहीं हैं अपन को मानते नहीं। तुम कहते हो हम बिल्कुल अंधे थे। बाबा ने ज्ञान का तीसरा नेत्र दिया है। हम तो सारे रचना के आदि, मध्य, अंत को जानते हैं। हम कोई देवताओं के आगे झुकेंगे नहीं। तुम मास्टर नॉलेजफुल बनते हो। तुम उन..... भी नॉलेजफुल बन रहे हो, नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। बाबा का बच्चा होकर पूरा वर्सा न लिया तो (बच्चा) बनकर ही क्या किया। दिल में वह आना चाहिए, रात को अपना पोतामेल देखना है। बाबा व्यापा.....

व्यापारी के बुद्धि में पोतामेल रहता है। गवर्मेन्ट सर्वेन्ट इतना नहीं समझते पोतामेल आदि से। बाबा कहते हैं अपने ... मुरादी सम्भालो, फायदा हुआ या घाटा। बाप अविनाशी रत्नों का फायदा देते हैं। यह भी तुमको मालूम है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। जो अच्छी रीत धारण करते हैं वह दान करते हैं। यह है अविनाशी (ज्ञान) रत्न। बाप है रूप–बसंत। आत्मा में ज्ञान है। तुम बच्चे भी हो रूप–बंसत। आत्मा में ही नॉलेज भ(रती) है। आत्मा को जाना जाता है परमात्मा को जाना जाता है। लिंग है। भक्ति मार्ग में बहुत बनाते हैं। बड़ा बनाते हैं। मर्तबा तो बहुत ऊँच ते ऊँच है ना। अमरनाथ में बाबा गया था देखा था कैसे बर्फ़ का बना..... शिव गोया रहता है। चित्र आदि जो बनाते हैं यह सभी भक्ति मार्ग के हैं। इनसे कोई प्राप्ति नहीं हो(ती) है। बाप ने सीढ़ी समझाई है। तुम ब्राह्मण पहले नम्बर के जिन हो। कहानी है ना जिन ने कहा– (काम नहीं) देंगे तो खा जाऊँगा। तो कहा सीढ़ी चढ़ो और उतरो। तुमको भी बाबा ने बेहद की सीढ़ी दी है। तुम जो फुल सीढ़ी चढ़ते हो उतरते हो। सीढ़ी का ज्ञान पाने से तुम कितना ऊँच पद पाते हो। फिर उतरते कहानी बहुत है। यहाँ वह कोई बात नहीं, मैं तो तुम्हारा बाप हूँ। मुझे पतित–पावन कहते हो ना। शक्तिवान हूँ, ऑलमाईटी अथॉरिटी हूँ। अथॉरिटी भी मुझ में है। मैं सभी वेदों, शास्त्रों आदि का राज़ जानता ..... इतनी बिन्दी कैसे पार्ट बजाती है। खेल कैसा वण्डरफुल है। वह भी तुम जातने हो। कब नहीं सुना हो(गा) आत्मा में 84 जन्मों का अविनाशी पार्ट है। 84 का रिकॉर्ड अविनाशी है। और कुछ नहीं कह सकते। कुद.... कहा जाता है। कब मिटने का नहीं है इसमें संशय उठता है तो पूछो। अच्छा मीठे–2 सिकीलधे रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते। बाप ने समझाया है यहाँ भी नम्बरवार बैठे हो। जो बच्चे बढ़ते रहेंगे योगी बनते जावेंगे, अवस्था (अच्छी हो) जावेगी। तुम फ़ील करेंगे हमारे पाप भस्म हो रहे हैं। उस समय सिवाय बिलवेड बाप के कोई भी (याद न) पावेंगे। तब स्कॉलरशिप मिलेगी। पिछाड़ी में कुछ भी याद न आना चाहिए। एकदम क्लीयर बनना है। (भक्ति) भी तुम अव्यभिचारी भक्ति करते थे। एक शिवबाबा की ही पूजा करते थे। दूसरा कोई याद ही नहीं शिवलिंग ही था। सोमनाथ का मन्दिर था। तो एक की ही भक्ति करते थे। ड्रामा में पार्ट ही ऐसा (है) कोई का मन्दिर ही नहीं था। अभी तो ढेर मन्दिर हैं। अभी बाप कहते हैं, एक बाप को ही याद (करो) कोई की याद न आए। नहीं तो व्यभिचारी याद हो जावेगी। फिर उनसे पाप चढ़ेगा। भक्ति मार्ग में तो याद भी न आना चाहिए। भगवान कहते हैं, हे बन्दरों हियर नो इविल। (जिससे) फ़ायदा ही नहीं वह बात भी न करो। एक दो को उन्नति की ही बातें सुनाओ। दो (अक्षर) बस है। बाप को याद करो तो पाप नाश हा जावेंगे। जिनको झरमुई–झगमुई की टेव पड़ ज(ाती) सुधरते ही नहीं। उन्हों का धंधा ही यह है। वाह्यात बातें सुनना और सुनाना। बाप कहते, संग न करो। जो अच्छी–2 ज्ञान की बातें सुनावे वह सुनो। बाहर में तो संसारी बातें सुनते रहते हो। (वह) बात सुनो तो नुकसान कर देंगे। मुँह मोड़ लेना चाहिए। यहाँ तुम बच्चों की बहुत उन्नति होगी। देव..... बैठे हो ना। मनुष्य अपने धंधे में रहते भी अपने ईष्टदेव को याद करते हैं ना। तुम भी जो आवे उनको समझाओ। दोनों सौदा कराओ। तुम कल्याणकारी हो ना। अच्छा, ऐसे कल्याण प्रति रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों प्रति रूहानी बाप का नमस्ते।